CBSE Class 12 हिंदी कोर

Sample Paper 04 (2020-21)

Maximum Marks: 80

Time Allowed: 3 hours

General Instructions:

i. इस प्रश्न पत्र में दो खंड हैं – खंड – अ और खंड – ब। खंड-अ में वस्तुपरक तथा खंड-ब में वर्णात्मक प्रश्न पूछे गए हैं।

ii. खंड-अ में कुल 6 प्रश्न पूछे गए हैं, जिनमें कुछ प्रश्नों के वैकल्पिक प्रश्न भी सम्मिलित हैं। दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए ही प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

iii. खंड-ब में कुल 8 प्रश्न पूछे गए हैं, जिनमें कुछ प्रश्नों के वैकल्पिक प्रश्न भी सम्मिलित हैं। दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए ही प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खंड-अ वस्तुपरक प्रश्न

1. **निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।**

कैसी विडंबना है कि उन्नीसवीं शताब्दी में जब अंग्रेजी 'ओरिएंटलिस्ट' कादम्बरी, कथा-सरित्सागर, पंचतन्त्र जैसी भारतीय कथाओं के पीछे पागल थे, स्वयं भारतीय लेखक 'अंग्रेजी ढंग का नावेल' लिखने के लिए व्याकुल थे। ये हैं उपनिवेशवाद के दो चेहरे!

निस्सन्देह कुछ लोग अपनी भाषा में 'अंग्रेजी ढंग का नावेल' लिखने में कुछ-कुछ कामयाब भी हो गए। उदाहरण के लिए लाला श्रीनिवास दास का 'परीक्षागुरु' (1882), जिसे आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'हिन्दी में अंग्रेजी ढंग का पहला उपन्यास' माना। लेकिन पूरा-पूरा 'अंग्रेजी ढंग का नावेल' सबसे न बन पड़ा। खासतौर से उनसे जो सर्जनशील रचनाकार थे; जैसे हिन्दी से ही उदाहरण लें तो ठाकुर जगमोहन सिंह, जिनकी कथाकृति 'श्यामास्वप्न' किसी भी तरह 'अंग्रेजी ढंग का नावेल' नहीं है। ऐसे सर्जनशील रचनाकारों के सिरमौर हैं बंकिमचन्द्र, जिन्हें प्रथम भारतीय उपन्यासकार होने का गौरव प्राप्त है।

छब्बीस वर्ष की कच्ची उम्र में बंकिमचन्द्र ने 'दुर्गेशनन्दिनी' (1865) नाम का अपना पहला बंगला उपन्यास प्रकाशित किया और एक साल के बाद 'कपालकुंडला' (1866) ; फिर तीन साल के अंतराल के बाद 'मृणालिनी' (1869)। इनमें से एक भी 'अंग्रेजी ढंग का नावेल' नहीं है। जगमोहन सिंह के 'श्यामास्वप्न' के समान ही ये तीनों उपन्यास किसी 'अंग्रेजी ढंग के नावेल' की अपेक्षा संस्कृत की 'कादम्बरी' की याद दिलाते हैं। यह भी एक विडंबना ही है। एक लेखक कथा की पुरानी परम्परा से मुक्त होकर एकदम आधुनिक ढंग की नई कथाकृति रचना चाहता है और परम्परा है कि उसके सर्जनात्मक

अवचेतन का संचालन कर रही है। कंबल बाबाजी को कैसे छोड़े! इस तरह बंकिमचन्द्र की रचना प्रक्रिया से गुजरकर जो चीज निकली उसके लिए सही नाम एक ही है - रोमांस!

उपन्यास का अर्थ जिनके लिए 'अंग्रेजी ढंग का नावेल' है - फिर उसकी परिभाषा जो भी हो, वे इसे बंकिमचन्द्र की विफलता मानेंगे लेकिन मेरी दृष्टि से लेखक की इस विफलता में ही भारतीय उपन्यास की सार्थकता निहित है। भारतीय उपन्यास के मूलाधार उन्नीसवीं शताब्दी के ये 'रोमांस' ही हैं, न कि तथाकथित अंग्रेजी ढंग के उपन्यास! उन्नीसवीं शताब्दी के भारतीय मानस का सही प्रतिनिधित्व 'कपालकुंडला' करती है, 'परीक्षागुरु' नहीं। 'परीखागुरु' का महत्व अधिक से अधिक ऐतिहासिक है और वह भी सिर्फ हिन्दी के लिए! जब कि 'कपालकुंडला' अपने जमाने की अत्याधिक लोकप्रिय कृति होने के साथ ही स्थायी कीर्ति की हकदार है। तथाकथित 'अंग्रेजी ढंग के नावेल' का तिरस्कार करके ही बंकिमचन्द्र के रोमांसधर्मी उपन्यासों ने भारतीय राष्ट्र के भारतीय उपन्यास की अपनी पहचान बनाने में पहल की।

अंग्रेजी ढंग के 'नावेल' का तिरस्कार वस्तुत: उपनिवेशवाद का तिरस्कार है। भारत से पहले अंग्रेजी ढंग के 'नावेल' को उत्तरी अमेरिका अस्वीकार ढंग के 'नावेल' का अनुकरण नहीं किया। 'स्कार्लेट लेटर' और 'मोबी डिक' ऐसे रोमांस' हैं जिन्हें 'राष्ट्रीय रूपक' के रूप में आज भी ग्रहण किया जाता है। अंग्रेजी साम्राज्यवाद से अपने आपको मुक्त कर अमेरिकी प्रतिभा ने आख्यान ने रूपबन्ध में भी स्वतन्त्रता प्राप्त की। इस प्रकार उत्तरी अमेरिका में राष्ट्र और उपन्यास का जन्म साथ-साथ हुआ। तब तक के अंग्रेजी 'नावेल' के रूपबन्ध में एक स्वतन्त्र राष्ट्र की उद्दाम आकांक्षाओं का अँटना संभव न था। नए राष्ट्र के एक नितांत नए उन्मुक्त रुपबन्ध का सृजन किया।

01. प्रस्तुत उपन्यास किस विषय पर आधारित है ?

(क) उपनिवेशवाद

(ख) रोमांस

(ग) कहानी

(घ) उपन्यास

02. बंकिमचंद्र की आरंभिक रचनाओं का केंद्र क्या था ?

(क) अंग्रेजी नॉवेल

(ख) सृजन

(ग) रोमांस

(घ) उपनिवेशवाद

03. किस रूप में अमेरिकी प्रतिभा ने अंग्रेजी साम्राज्यवाद से खुद को मुक्त किया ?

(क) उपनिवेशवाद

(ख) उपन्यास

(ग) रोमांस

(घ) आख्यान

04. निम्न में से किसको आज भी राष्ट्रीय रुपक के रूप में माना जाता है ?

(क) मोबी डिक

(ख) कादंबरी

(ग) पंचतंत्र

(घ) कपालकुंडला

05. उन्नीसवी शताब्दी में अंग्रेज किन भारतीयों कथाओं के पीछे पागल नहीं थे ?

(क) कादंबरी

(ख) उपन्यास

(ग) मृणालिनी

(घ) पंचतंत्र

06. अंग्रेजी ढंग के नॉवेल के तिरस्कार से क्या तात्पर्य है ?

(क) अंग्रेजी साहित्य का तिरस्कार

(ख) उपनिवेशवाद का तिरस्कार

(ग) स्वतंत्रता का आगमन

(घ) उपन्यास की शुरुआत

07. कपालकुंडला किसके प्रतिनिधि के रूप में है ?

(क) अंग्रेजी नॉवेल

(ख) बांग्ला उपन्यास

(ग) भारतीय मानस

(घ) रोमांटिक उपन्यास

08. भारतीय उपन्यास का मूलाधार क्या है ?

(क) अंग्रेजी ढंग का नॉवेल

(ख) परीक्षा गुरु

(ग) कादंबरी

(घ) बंकिमचंद्र के उपन्यास

09. बंकिमचंद्र का पहला उपन्यास कौन था ?

(क) दुर्गेशनंदिनी

(ख) कपालकुंडला

(ग) मृणालिनी

(घ) श्यामास्वप्न

10. हिन्दी में अंग्रेजी ढंग का पहला उपन्यास किसे माना गया ?

(क) मृणालिनी

(ख) परीक्षागुरु

(ग) कादंबरी

(घ) श्यामस्वप्न

OR

निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

इतिहास लिखने की ओर कोई जाति तभी प्रवृत्त होती है जब उसका ध्यान अपने इतिहास के निर्माण की ओर जाता है। यह बात साहित्य के बारे में उतनी ही सच है जितनी जीवन के। हिंदी में आज इतिहास लिखने के लिए यदि विशेष उत्साह दिखाई पड़ रहा है तो यही समझा जाएगा कि स्वराज्य-प्राप्ति के बाद सारा भारत जिस प्रकार सभी क्षेत्रों में इतिहास-निर्माण के लिए आकुल है उसी प्रकार हिंदी के विद्वान एवं साहित्यकार भी अपना ऐतिहासिक दायित्व निभाने के लिए प्रयत्नशील हैं। पहले भी जब साहित्य का इतिहास लिखने की परंपरा का सूत्रपात हुआ था तो संपूर्ण राष्ट्रीय जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के इतिहास-निर्माण के साथ ही। यदि आरंभिक इतिहासों के इतिहास में न जाकर पं. रामचंद्र शुक्ल के इतिहास को ही लें, जो हिंदी-साहित्य का पहला व्यवस्थित इतिहास माना जाता है, तो उसकी ऐतिहासिकता द्योतित करने के लिए उस युग का राष्ट्रीय आंदोलन समानांतर दिखाई पड़ेगा। राजनीतिक इतिहास ग्रंथों का सिलसिला भी उसी ऐतिहासिक दौर में जमा। परंतु शुक्लजी के इतिहास के संदर्भ में जो सबसे प्रासंगिक तथ्य है वह है तत्कालीन रचनात्मक साहित्य की ऐतिहासिक क्रांति - कविता और कथा-साहित्य का नवीन सृजनात्मक प्रयत्न। साहित्य का वैसा इतिहास तभी संभव हुआ जब साहित्य-रचना के क्षेत्र में एक ऐतिहासिक परिवर्तन आया, जब सच्चे अर्थों में इतिहास बना।

इसके अतिरिक्त, शुक्लजी का इतिहास 'हिंदी शब्द सागर' के साथ आया था, जिसके आसपास ही पं. कामताप्रसाद गुरु का पहला प्रामाणिक 'हिंदी व्याकरण' भी निकला था। साहित्य का इतिहास, शब्दकोश एवं व्याकरण-क्या इन तीनों का एक साथ बनना आकस्मिक है? यह तथ्य इसलिए ध्यान देने योग्य है कि आज फिर जब साहित्यिक इतिहास लिखने का उत्साह उमड़ा है तो साथ-साथ शब्दकोश और व्याकरण के संशोधन एवं परिवर्तन के प्रयत्न भी हो रहे हैं; बल्कि जिस काशी नगरी प्रचारिणी सभा ने पिछले ऐतिहासिक दौर में ये तीनों कार्य किए थे, वही संस्था आज फिर बहुत बड़े पैमाने पर तीनों योजनाओं के साथ प्रस्तुत है। और चूंकि अब हिंदी का कार्यक्षेत्र पहले से कहीं अधिक व्यापक हो गया है इसलिए इस प्रकार के प्रयत्न यदि अन्य अनेक जगहों से भी हों तो स्वाभाविक ही कहा जाएगा, जैसे भारतीय हिंदी परिषद, प्रयाग की ओर से तीन जिल्दों में प्रकाशित होनेवाला 'हिंदी-साहित्य'। इन तथ्यों से प्रमाणित होता है कि आज भी हिंदी उन सभी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पूर्णत: तत्पर है, जो कि उससे अपेक्षित भाषाएँ जो कार्य काफी पहले कर चुकी हैं उसे थोड़े समय में ही जल्द से जल्द पूरा करके हिंदी भी सबके साथ आ जाना चाहती है, बल्कि संभव हुआ तो आगे निकल जाने के लिए भी आकुल है। सभा एवं परिषद के बृहद् – मध्यम इतिहास अनायास ही 'कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इंगलिश लिटरेचर' और 'ऑक्सफोर्ड हिस्ट्री आफ इंगलिश लिटरेचर' की याद दिला देते हैं। जैसा कि इन हिंदी इतिहासों का मंतव्य स्पष्ट किया गया है, 'कोई एक लेखक सभी विषयों पर विशेषज्ञता की दृष्टि से विचार नहीं कर सकता है, इसलिए विभिन्न

विषयों के विशेषज्ञों के सहयोग से ऐसा इतिहास प्रस्तुत किया जाए जिसमें नवीनतम खोजों और नवीन व्याख्याओं का समुचित उपयोग हो सके।' ऐसे संदर्भ-ग्रंथों की एक निश्चित उपयोगिता है किंतु यह उनकी अनिवार्य सीमा भी है। इस सीमा को ध्यान में रखकर ही साहित्यिक इतिहास पर पुनर्विचार संभव है।

01. प्रस्तुत गद्यांश में किस विषय पर बात हुई है ?

(क) साहित्य का निर्माण

(ख) इतिहास निर्माण

(ग) हिन्दी साहित्य का इतिहास लेखन

(घ) इतिहास लेखन

02. किस समय से इतिहास लेखन में हिन्दी के विद्वानों ने व्याकुलता दिखाई ?

(क) और इतिहास लिखे जाने के बाद

(ख) स्वतंत्रता के बाद

(ग) शब्दकोश के निर्माण के बाद

(घ) कथा साहित्य के आने के बाद

03. साहित्यिक इतिहास की सीमा क्या है ?

(क) शब्दकोश

(ख) पुनर्विचार

(ग) मध्य इतिहास

(घ) उसकी उपयोगिता

04. वर्तमान में हिन्दी का कार्य क्षेत्र कैसा है ?

(क) सबसे आगे

(ख) व्यापक

(ग) कम

(घ) सिमटा हुआ

05. भारतीय हिन्दी परिषद कहाँ स्थित है ?

(क) लखनऊ

(ख) काशी

(ग) प्रयाग

(घ) बनारस

06. शुक्ल जी का इतिहास किसके साथ आया था ?

(क) हिन्दी शब्द सागर

(ख) हिन्दी व्याकरण

(ग) मध्यकालीन इतिहास

(घ) आधुनिक काल इतिहास

07. साहित्य का इतिहास लिखना कैसे संभव हुआ ?

(क) हिन्दी व्याकरण के आने से

(ख) लिखने आने पर

(ग) साहित्य के रचना में परिवर्तन होने पर

(घ) कुछ समय बीतने पर

08. इतिहास लिखने की ओर कोई प्रवृत कब होता है ?

(क) युग की समाप्ति के बाद

(ख) जब कुछ इतिहास हो जाता है

(ग) जब सही समय आता है

(घ) जब इतिहास निर्माण की जरूरत होती है

09. इतिहास लेखन का कार्य किस संस्था ने पहले किया था ?

(क) नागरी प्रचारिणी सभा

(ख) काशी सभा

(ग) राम चंद्र शुक्ल

(घ) हिन्दी इतिहास संस्था

10. हिन्दी साहित्य का पहला व्यवस्थित इतिहास किसके इतिहास को माना जाता है ?

(क) नामवर सिंह

(ख) रामचन्द्र शुक्ल

(ग) हजारीप्रसाद द्विवेदी

(घ) कामता प्रसाद

2. **निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।**

यदि तुम्हारे घर के
एक कमरे में आग लगी हो
तो क्या तुम
दूसरे कमरे में सो सकते हो?
यदि तुम्हारे घर के एक कमरे में
लाशें सड़ रहीं हों

तो क्या तुम
दूसरे कमरे में प्रार्थना कर सकते हो?
यदि हाँ
तो मुझे तुम से
कुछ नहीं कहना है।

देश कागज पर बना
नक्शा नहीं होता
कि एक हिस्से के फट जाने पर
बाकी हिस्से उसी तरह साबुत बने रहें
और नदियां, पर्वत, शहर, गांव
वैसे ही अपनी-अपनी जगह दिखें
अनमने रहें।
यदि तुम यह नहीं मानते
तो मुझे तुम्हारे साथ
नहीं रहना है।

इस दुनिया में आदमी की जान से बड़ा
कुछ भी नहीं है
न ईश्वर
न ज्ञान
न चुनाव
कागज पर लिखी कोई भी इबारत
फाड़ी जा सकती है
और जमीन की सात परतों के भीतर
गाड़ी जा सकती है।

जो विवेक
खड़ा हो लाशों को टेक
वह अंधा है
जो शासन
चल रहा हो बंदूक की नली से
हत्यारों का धंधा है

यदि तुम यह नहीं मानते
तो मुझे
अब एक क्षण भी
तुम्हें नहीं सहना है।

याद रखो
एक बच्चे की हत्या
एक औरत की मौत
एक आदमी का
गोलियों से चिथड़ा तन
किसी शासन का ही नहीं
सम्पूर्ण राष्ट्र का है पतन।

01. निम्न में क्या सही है ?

(क) देश कागज पर बना नक्शा होता है

(ख) बेबस की मौत सम्पूर्ण राष्ट्र का पतन है

(ग) सबसे बड़ा ईश्वर है

(घ) लाशों पर खड़ा विवेक अंधा नहीं है

02. देश और नक्शे में क्या अंतर है ?

(क) देश और नक्शे का कोई संबंध नहीं है

(ख) देश के टुकड़े होने पर बाकी हिस्सों को कुछ नहीं होता

(ग) नक्शे के फटने से बाकी हिस्सों पर असर नहीं पड़ता

(घ) नक्शा का महत्व अधिक होता है

03. एक बच्चे की हत्या को कवि ने क्या कहा है ?

(क) राष्ट्र का गिरना

(ख) शासन का पतन

(ग) विवेक का पतन

(घ) बुद्धि का पतन

04. काव्यांश के अनुसार अंधा कौन है ?

(क) ज्ञान

(ख) कानून

(ग) शासन

(घ) विवेक

05. कवि ने सबसे अधिक महत्वपूर्ण किस चीज को बताया है ?

(क) ईश्वर को

(ख) ज्ञान को

(ग) चुनाव को

(घ) आदमी को

OR

निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

हम दूरदर्शन पर बोलेंगे
हम समर्थ शक्तिवान
हम एक दुर्बल को लाएंगे
एक बंद कमरे में
उससे पूछेंगे तो आप क्या आपाहिज हैं ?
तो आप क्यों अपाहिज हैं ?
आपका अपाहिजपन तो दुख देता होगा
देता है ?
(कैमरा दिखाओ इसे बड़ा बड़ा)
हां तो बताइए आपका दुख क्या है
जल्दी बताइए वह दुख बताइए
बता नहीं पाएगा
सोचिए
बताइए
आपको अपाहिज होकर कैसा लगता है
कैसा
यानी कैसा लगता है
(हम खुद इशारे से बताएंगे कि क्या ऐसा ?)
सोचिए
बताइए
थोड़ी कोशिश करिए
(यह अवसर खो देंगे ?)
आप जानते हैं कि कार्यक्रम रोचक बनाने के वास्ते
हम पूछ-पूछ उसको रुला देंगे

इंतजार करते हैं आप भी उसके रो पड़ने का
करते हैं ?
फिर हम परदे पर दिखलाएंगे
फूली हुई आंख की एक बड़ी तसवीर
बहुत बड़ी तसवीर
और उसके होंठों पर एक कसमसाहट भी
(आशा है आप उसे उसकी अपंगता की पीड़ा मानेंगे)
एक और कोशिश
दर्शक
धीरज रखिए
देखिए
हमें दोनों एक संग रुलाने हैं
आप और वह दोनों
(कैमरा
बस करो
नहीं हुआ
रहने दो
परदे पर वक्त की कीमत है)
अब मुसकुराएंगे हम
आप देख रहे थे सामाजिक उद्देश्य से युक्त कार्यक्रम
(बस थोड़ी ही कसर रह गई)
धन्यवाद ।

I. साक्षात्कारकर्ता किसे रुलाना चाहता है?
   i. दर्शक और अपाहिज दोनों को
   ii. दर्शक को
   iii. अपाहिज को
   iv. कैमरा मैन को
II. प्रस्तुत काव्यांश से मीडिया के किस भाव का पता चलता है?
   i. मदद की भावना
   ii. संवेदनशीलता
   iii. संवेदनहीनता
   iv. सामाजिक कार्य की भावना
III. **फिर हम परदे पर दिखलाएंगे** पंक्ति में अलंकार बताइए।

i. श्लेष
ii. उत्प्रेक्षा
iii. मानवीकरण
iv. अनुप्रास

IV. फूली हुई आँख की तस्वीर से क्या तात्पर्य है?
i. अपाहिज का रोना
ii. अपाहिज की पीड़ा
iii. संवेदना
iv. मीडिया का दुख

V. प्रस्तुत काव्यांश में कौन सा रस है?
i. करुण रस
ii. वीभत्स रस
iii. भयानक रस
iv. रौद्र रस

3. कार्यालयी हिंदी और रचनात्मक लेखन निम्नलिखित में से निर्देशानुसार विकल्पों का चयन कीजिए।

a. आलेख के विषय नहीं हैं?

a. ब्रेकिंग न्यूज

b. राजनीति

c. विज्ञान

d. समसामयिकी

b. पत्रकारिता के प्रमुख कितने प्रकार है?

a. छह

b. पाँच

c. चार

d. आठ

c. समाचार-पत्र संपूर्ण कब बनता है?

a. प्रभाविकता, निकटता आदि तत्वों

b. समाचारों का संकलन

c. वाक्य छोटे, सरल और सहज होना

d. टिप्पणी, फोटो और कार्टून का होना

d. विशेष लेखन के लिए प्रयुक्त होने वाली शैली कौन सी है?

a. उल्टा पिरामिड शैली

b. सीधी पिरामिड शैली

c. यथार्थ परकशैली

d. पिरामिड शैली

e. रिसर्च का काम किसकी वजह से और आसान हो गया है?

a. इंटरनेट

b. जनसंचार माध्यम

c. टेलीविजन

d. पत्रकारिता

4. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-**

जाने क्या रिश्ता है, जाने क्या नाता है
जितना भी उँड़ेलता हूँ, भर-भर फिर आता है
दिल में क्या झरना है?
मीठे पानी का सोता है
भीतर वह, ऊपर तुम
मुसकाता चाँद ज्यों धरती पर रात भर
मुझ पर त्यों तुम्हारा ही खिलता वह चेहरा है

I. प्रस्तुत काव्यांश के अनुसार कविता को क्या प्रभावशाली बनाता है?

i. कविता प्रभावशाली नहीं है

ii. तुकबंदी

iii. छंदों का प्रयोग

iv. अर्थ की गतिशीलता

II. **भर-भर फिर आता है** पंक्ति में किस अलंकार का प्रयोग किया गया है?

i. उत्प्रेक्षा अलंकार

ii. पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार

iii. यमक अलंकार

iv. श्लेष अलंकार

III. काव्यांश में चाँद से किसकी तुलना की है?

i. खिलते हुए चेहरे की

ii. झरने की

iii. उजाले की

iv. वैभव की

IV. प्रस्तुत काव्यांश को किस कविता से लिया गया है?

i. उषा

ii. स्वीकारा है

iii. सहर्ष स्वीकारा है

iv. बादल राग

V. इस कविता के कवि कौन हैं?

i. शमशेर

ii. मुक्तिबोध

iii. रघुवीर सहाय

iv. निराला

5. **निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-**

उन्होने पुड़िया को धीरे से अपनी तरफ़ सुरकाना शुरू किया। जब सफ़िया की बात खत्म हो गई तब उन्होने पुड़िया को दोनों हाथों मे उठाया, अच्छी तरह लपेटा और खुद सफ़िया के बैग मे रख दिया। बैग सफ़िया को देते हुए बोले, "मुहब्बत तो कस्टम से इस तरह गुज़र जाती है कि कानून हैरान रह जाता है।" वह चलने लगी तो वे भी खड़े हो गए और कहने लगे, "जामा मस्जिद की सीढ़ियो को मेरा सलाम कहिएगा और उन खातून को यह नमक देते वक्त मेरा तरफ़ से कहिएगा कि लाहौर अभी तक उनका वतन है और देहली मेरा, तो बाकी सब रफ़्ता-रफ़्ता ठीक हो जाएगा।"

I. पुड़िया में ऐसा क्या था जो कहानी बन गया?

i. चीनी

ii. नमक

iii. राख

iv. मिट्टी

II. आशय समझाइए- "जामा मस्जिद की सीढ़ियों को मेरा सलाम कहिएगा।"

i. मस्जिद के प्रति स्नेह

ii. मस्जिद का सम्मान

iii. मस्जिद में बिताया समय

iv. पुरानी यादों का सम्मान और स्नेह

III. "बाकी सब रफ़्ता-रफ़्ता ठीक हो जाएगा" रफ़्ता-रफ़्ता का अर्थ चुनिये -

i. धीरे-धीरे

ii. आगे-पीछे

iii. जल्दी ही

iv. समझ-समझ कर

IV. गदयांश में प्रयुक्त "उन्होंने" पद किसके लिए प्रयुक्त हुआ है ?

i. पाकिस्तानी कस्टम अधिकारी

ii. भारत के कस्टम अधिकारी

iii. लेखिका के भाई

iv. अन्य अधिकारी

V. खातून कौन थी?

i. लेखिका की रिश्तेदार

ii. लेखिका की पड़ोसन

iii. लेखिका स्वयं

iv. सफ़िया बीबी

6. निम्नलिखित प्रश्नों में निर्देशानुसार विकल्पों का चयन कीजिए:

a. भूषण ने अपने पिता को क्या उपहार दिया?

a. कपड़ा

b. ड्रेसिंग गाउन

c. धोती

d. गमछा

b. यशोधर पंत अपनी नौकरी में किस पद पर थे?

a. सेक्शन ऑफिसर

b. क्लर्क

c. चपरासी

d. कुछ नहीं

c. किस कारण से लेखक का पाठशाला में विश्वास बढ़ने लगा? **(जूझ)**

a. नई किताबे

b. वसंत पाटील की दोस्ती

c. नए कपड़े

d. गणित के मास्टर

d. **जूझ** पाठ के अनुसार लेखक के घर कोल्हू कब शुरू होता था?

a. साल के शुरुआत में

b. और लोगों के बाद

c. होली के बाद

d. दिवाली के बाद

e. **अतीत में दबे पाँव** पाठ के अनुसार गुलकारी शब्द का क्या अर्थ होगा?

a. कशीदाकारी

b. नमूना

c. कपड़ा

d. सुई

f. **अतीत में दबे पाँव** पाठ के अनुसार सिंधु घाटी सभ्यता का अद्वितीय वास्तुकौशल किससे स्थापित होता है?

a. महाकुंड

b. किला

c. स्तूप

d. ज्ञानशाला

g. दुनिया की प्राचीन सभ्यता होने के भारत के दावे को _____ का वैज्ञानिक आधार मिल गया। **[अतीत में दबे पाँव]**

a. इतिहास

b. विज्ञान

c. समाज

d. पुरातत्व

h. **डायरी के पन्ने** पाठ के अनुसार लेखिका को बाकी लोग क्या समझते थे?

a. बहादुर

b. बुद्धिमान

c. मूर्ख

d. घमंडी

i. ऐन फ्रैंक ने अपनी डायरी किसे लिखी है?

a. किट्टी

b. मार्गोट

c. पीटर

d. डसेल

j. **डायरी के पन्ने** पाठ के अनुसार लेखिका के लिए दूसरा सदमा क्या था?

a. माता का बुलावा

b. मार्गोट का बुलावा

c. पिता का बुलावा

d. युद्ध

खंड-ब वर्णात्मक प्रश्न

7. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 150 शब्दों में रचनात्मक लिखिये:

   a. **साक्षरता और संचार-माध्यम** विषय पर रचनात्मक लेख लिखिए।

   b. **प्रात:काल की सैर** विषय पर रचनात्मक लेख लिखिए।

   c. **उपभोक्ता-शोषण** विषय पर रचनात्मक लेख लिखिए।

8. भाँति-भाँति के अंधविश्वास और भ्रांतियाँ फैलाने में टी.वी. माध्यमों के इस्तेमाल पर हस्तक्षेप कर उन्हें रुकवाने के दिशा-निर्देश जारी करने के लिए भारत सरकार के सूचना और प्रसारण मंत्री को पत्र लिखिए।

   OR

   अस्पताल में किसी रोगी के इलाज में बरती गई लापरवाही का विवरण देते हुए वरिष्ठ चिकित्साधिकारी को पत्र लिखिए।

9. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 40-50 शब्दों में दीजिये: (3+2)

   a. कहानी का नाट्य- रूपांतरण करते समय किन महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना चाहिए?

      OR

      कविता के किन प्रमुख घटको का ध्यान रखना चाहिए?

   b. कहानी लेखन में कथानक के पत्रों का संबंध स्पष्ट कीजिए।

      OR

      कहानी के तत्वों की पुष्टि करे।

10. निम्नलिखित में से 2 प्रश्नों के उत्तर 40-50 शब्दों में दीजिये: (3+2)

    a. किसी समाचार पत्र को कब सम्पूर्ण माना जाता है?

       OR

       मुद्रित माध्यमों की सीमा क्या है ?

    b. पेज थ्री पत्रकारिता क्या है?

       OR

       मुद्रित माध्यम की दो विशेषताएँ बताइए।

11. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर 50-60 शब्दों में दीजिये:

a. अपाहिज अपने दुख के बारे में क्यों नहीं बता पाता?

b. उषा कविता में कवि ने किस जादू के टूटने का वर्णन किया है?

c. व्याख्या करें - ऊँचे नीचे करम, धरम-अधरम करि, पेट ही को पचत, बेचत बेटा-बेटकी।

12. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर 30-40 शब्दों में दीजिये:

a. कवि अपने संबोध्य (जिसको कविता संबोधित है कविता का 'तुम') को पूरी तरह भूल जाना चाहता है, इस बात को प्रभावी तरीके से व्यक्त करने के लिए क्या युक्ति अपनाई है? रेखांकित अंशों को ध्यान में रखकर उत्तर दें।(सहर्ष स्वीकारा है)

b. फिराक गोरखपुरी की कविताओं के आधार पर बताइए क्या शायर भाग्यवादी है?

c. शोकग्रस्त माहौल में हनुमान के अवतरण को करुण रस के बीच वीर रस का आविर्भाव क्यों कहा गया है?

13. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर 50-60 शब्दों में दीजिये:

a. सिद्ध कीजिए कि भक्तिन तर्क-वितर्क करने में माहिर थी।

b. **काले मेघा पानी दें** संस्मरण विज्ञान के सत्य पर सहज प्रेम की विजय का चित्र प्रस्तुत करता हैं- स्पष्ट कीजिए।

c. डॉ. आंबेडकर समता को काल्पनिक वस्तु क्यों मानते हैं?

14. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर 30-40 शब्दों में दीजिये:

a. बाज़ार का जादू किन पर चलता है और क्यों?

b. पहलवान लुट्टन के सुख-चैन भरे दिनों का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

c. **नमक** कहानी में भारत व पाक की जनता के आरोपित भेदभावों के बीच मुहब्बत का नमकीन स्वाद घुला हुआ है, कैसे?

12 Hindi Core SP-04

Class 12 - हिंदी कोर

Solution

खंड-अ वस्तुपरक प्रश्न

1. 01. (घ) उपन्यास
   02. (ग) रोमांस
   03. (घ) आख्यान
   04. (क) मोबी डिक
   05. (ग) मृणालिनी
   06. (ख) उपनिवेशवाद का तिरस्कार
   07. (ग) भारतीय मानस
   08. (घ) बंकिमचंद्र के उपन्यास
   09. (क) दुर्गेशनंदिनी
   10. (ख) परीक्षागुरु

   OR

   01. (ग) हिन्दी साहित्य का इतिहास लेखन

   02. (ख) स्वतंत्रता के बाद

   03. (घ) उसकी उपयोगिता

   04. (ख) व्यापक

   05. (ग) प्रयाग

   06. (क) हिन्दी शब्द सागर

   07. (ग) साहित्य के रचना में परिवर्तन होने पर

   08. (घ) जब इतिहास निर्माण की जरूरत होती है

   09. (क) नागरी प्रचारिणी सभा

   10. (ख) रामचन्द्र शुक्ल

2. I. (ख) बेबस की मौत सम्पूर्ण राष्ट्र का पतन है
   II. (ग) नक्शे के फटने से बाकी हिस्सों पर असर नहीं पड़ता
   III. (क) राष्ट्र का गिरना
   IV. (घ) विवेक
   V. (घ) आदमी को

   OR

   I. (i) दर्शक और अपाहिज दोनों को
   II. (iii) संवेदनहीनता
   III. (iv) अनुप्रास
   IV. (ii) अपाहिज की पीड़ा
   V. (i) करुण रस

3. कार्यालयी हिंदी और रचनात्मक लेखन निम्नलिखित में से निर्देशानुसार विकल्पों का चयन कीजिए।

   a. (a) ब्रेकिंग न्यूज
      Explanation: ब्रेकिंग न्यूज़ आलेख का नहीं रिपोर्ताज का भाग है।
   b. (b) पाँच
      Explanation: खोजपरक पत्रकारिता, विशेषीकृत पत्रकारिता, वॉचडॉग पत्रकारिता, एडव्होकेसी (एडवोकेसी) पत्रकारिता, वैकल्पिक मीडिया।
   c. (d) टिप्पणी, फोटो और कार्टून का होना
      Explanation: जब समाचार-पत्र में समाचारों के अलावा विचार, संपादकीय, टिप्पणी, फोटो और कार्टून होते हैं तब समाचार-पत्र पूर्ण बनता है।
   d. (a) उल्टा पिरामिड शैली
      Explanation: विशेष लेखन के लिए विषय चाहे कोई भी हो उल्टा पिरामिड शैली ही प्रयोग होती है।
   e. (a) इंटरनेट
      Explanation: इंटरनेट की वजह से रिसर्च का काम और भी आसान हो गया है।

4. I. (iv) अर्थ की गतिशीलता
   II. (ii) पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार
   III. (i) खिलते हुए चेहरे की
   IV. (iii) सहर्ष स्वीकारा है
   V. (ii) मुक्तिबोध

5. I. (ii) नमक
   II. (iv) पुरानी यादों का सम्मान और स्नेह

III. (i) धीरे-धीरे

IV. (i) पाकिस्तानी कस्टम अधिकारी

V. (iv) सफ़िया बीबी

6. निम्नलिखित प्रश्नों में निर्देशानुसार विकल्पों का चयन कीजिए:

a. (b) ड्रेसिंग गाउन

Explanation: भूषण ने अपने पिता को ड्रेसिंग गाउन उपहार में दिया, ताकि उन्हें सुबह दूध लाने जाने में परेशानी ना हो।

b. (a) सेक्शन ऑफिसर

Explanation: पाठ के अनुसार यशोधर पंत होम मिनिस्ट्री में कार्यरत थे। अपने कार्यालय में वे सेक्शन ऑफिसर के पद पर कार्य करते थे।

c. (b) वसंत पाटील की दोस्ती

Explanation: वसंत पाटील से दोस्ती के बाद ही लेखक को पाठशाला में रुचि होने लगी। अन्यथा अपने से छोटे बच्चों के साथ पढ़कर उसे बहुत बुरा लगने लगता था।

d. (d) दिवाली के बाद

Explanation: दिवाली के बाद लेखक के घर कोल्हू शुरू हो जाता था, जिसमें ईख से गुड़ बनाया जाता था। गाँव में और लोग से पहले ही लेखक के यहाँ कोल्हू शुरू हो जाता था।

e. (a) कशीदाकारी

Explanation: गुलकारी शब्द का अर्थ कशीदाकारी होता है। यह वस्तुतः बुनने की एक कला है, जिसमें कपड़े पर फूल आदि उगाए जाते हैं।

f. (a) महाकुंड

Explanation: पाठ के अनुसार सिंधु घाटी सभ्यता का अद्वितीय वास्तुकौशल अनुष्ठानिक महाकुंड से स्थापित होता है। सभ्यता का यह निर्माण लगभग अपने मूल स्वरूप में है। इसीलिए यह निर्माण अद्वितीय है।

g. (d) पुरातत्व

Explanation: सिंधु घाटी सभ्यता की खुदाई और उनसे प्राप्त तमाम वस्तुओं से भारत को दुनिया की प्राचीन सभ्यता होने का पुरातत्व का वैज्ञानिक आधार मिल गया।

h. (d) घमंडी

Explanation: पाठ के अनुसार लेखिका को उसके आस-पास के लोग घमंडी और तुनुकमिज़ाज समझते थे, लेकिन वो ऐसी नहीं थी।

i. (a) किट्टी

Explanation: ऐन फ्रैंक ने अपनी डायरी चिट्ठी के रूप में किट्टी को लिखी है।

j. (b) मार्गोट का बुलावा

Explanation: पाठ के अनुसार लेखिका के लिए दूसरा सदमा उसकी बहन मार्गोट का अचानक सुरक्षित स्थान पर

अकेले चले जाना था।

खंड-ब वर्णात्मक प्रश्न

7. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 150 शब्दों में रचनात्मक लिखिये:

a. **साक्षरता और संचार-माध्यम**

भारत में प्राचीनकाल से ही मानव-मूल्यों के प्रचार-प्रसार की महान परंपरा रही है। मानव-विकास के सबसे महत्वपूर्ण घटक 'शिक्षा' के प्रसार में संत-महात्माओं ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने मौखिक तरीकों से सामाजिक परिवर्तन का प्रयास किया। इसी परंपरा में जनसंचार के लोकमाध्यम; जैसे-कठपुतली नृत्य, कथावाचन, लोकसंगीत, नौटंकी आदि, विकसित हुए जिन्होंने लोकशिक्षा का प्रसार किया। आज समाचार-पत्र, रेडियो, टी०वी०, सिनेमा, वीडियो आदि प्रचार के अत्याधुनिक माध्यम विकसित हो चुके हैं।

समाचार-पत्रों ने अपनी कुछ सीमाओं के बावजूद साक्षरता के प्रसार में बहुमूल्य योगदान दिया है। मनोरंजन से लेकर अनेक शिक्षाप्रद कथाओं, परिचर्चाओं, भेंटवार्ताओं एवं शिक्षा संबंधी योजनाओं की जानकारी जन-साधारण को देकर निरक्षरता के विरुद्ध लोगों में जागृति पैदा करते हैं। हालाँकि आकाशवाणी सहज, सुलभ व विस्तृत पहुँच के कारण सर्वाधिक लोकप्रिय रही है। साक्षरता को जन-अभियान बनाने तथा शिक्षा के महत्व का संदेश गाँव-गाँव, गली-गली पहुँचाने में रेडियो का योगदान सर्वविदित है।लेकिन अब इनके स्तर में भी गिरावट आई है, अब अखबार भी पूँजीवाद से ग्रस्त हो चुके हैं, अब वे आवश्यक समाचारों के अनावश्यक समाचार देते हैं, जो कुछ उपयोगी साबित नहीं होते।

गाँवों में आज भी स्थिति बेहद खराब है। वहाँ पर पारंपरिक संचार-माध्यमों के साथ आधुनिक संचार-माध्यमों का प्रभावशाली प्रयोग किया जा सकता है। इससे संचार-माध्यमों व आम लोगों के बीच संचार-रिक्तता की स्थिति समाप्त हो जाएगी और साक्षरता का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है।

b. **प्रात:काल की सैर**

प्रातः काल की सैर से मन प्रफुल्लित तथा तन स्वस्थ्य रहता है। स्वस्थ व्यक्ति ही समर्थ होता है और यह सर्वमान्य सत्य है कि वही इच्छित कार्य कर सकता है। वही व्यापार, सेवा, धर्म आदि हर क्षेत्र में सफल हो सकता है। व्यक्ति तभी स्वस्थ रह सकता है जब वह व्यायाम करे। व्यायाम में खेल-कूद, नाचना, तैराकी, दौड़ना आदि होते हैं, परंतु ये तरीके हर व्यक्ति के लिए सहज नहीं होते। हर व्यक्ति की परिस्थिति व शारीरिक दशा अलग होती है। ऐसे लोगों के लिए प्रात:काल की सैर से बढ़िया विकल्प नहीं हो सकता।प्रातः काल में सैर करने से हम आज के प्रदूषित वातावरण में भी थोड़ी शुद्ध हवा ले सकते हैं।

यदि व्यक्ति नियमित रूप से प्रात:काल की सैर करे तो उसे अधिक फायदा ले सकता है।प्रातः सैर से मष्तिष्क को भी फायदा होता है। सैर के समय निरर्थक चिंताओं से दूर रहना चाहिए। प्रात:कालीन सैर के लिए उपयुक्त स्थान का होना भी जरूरी है। घूमने का स्थान खुला व साफ़-सुथरा और प्रदूषण रहित होना चाहिए। हरी घास पर नंगे पैर चलने से आँखों की रोशनी बढ़ती है, तथा शरीर में ताजगी आती है। इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि यह नियम सर्दी में

लागू नहीं होता।

अत्यधिक ठंड से नंगे पैर चलने से व्यक्ति बीमार हो सकता है। हरित क्षेत्र में सैर करनी चाहिए। इसके लिए नदियों-नहरों व खेतों के किनारे, पार्क, बाग-बगीचे आदि भी उपयोगी स्थान माने गए हैं। खुली सड़कों पर वृक्षों के नीचे घूमा जा सकता है। यदि ये सब कुछ उपलब्ध न हों तो खुली छत पर घूमकर लाभ उठाया जा सकता है। प्रात:कालीन सैर से तन-मन प्रसन्न हो सकता है। यह सस्ता व सर्वसुलभ उपाय है।

c. **उपभोक्ता-शोषण**

विषमता शोषण की जननी है। समाज में जितनी अधिक विषमता होगी, सामान्यतया शोषण भी उतना ही अधिक होगा। चूँकि यहाँ बात उपभोक्ता-शोषण की हो रही है तो सर्वप्रथम उपभोक्ता शोषण को समझना आवश्यक है। उपभोक्ता-शोषण का तात्पर्य केवल उत्पादक व व्यापारियों द्वारा किए जाने वाले शोषण से ही लिया जाता है, परंतु 'उपभोक्ता' शब्द के दायरे में वस्तुएँ व सेवाएँ-दोनों का उपभोग शामिल है। सेवा क्षेत्र के अंतर्गत डॉक्टर, शिक्षक, प्रशासनिक अधिकारी, वकील आदि आते हैं। इन्होंने उपभोक्ता-शोषण के जो कीर्तिमान बनाए हैं, वे 'गिनीज बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स' में दर्ज कराने लायक हैं।

आज के दौर में उपभोक्ता-शोषण में बहुत वृद्धि हुई है।सब अपने से छोटे को किसी भी तरीके से दबाना चाहते हैं।एक अफ़सर अपनी सात पीढ़ियों को चैन से रखने के लिए सरकारी पैसे को निगल जाता है, तो शिक्षकों को ट्यूशन से फुर्सत नहीं मिलती। डॉक्टर प्राइवेट सर्विस को ही जनसेवा मानते हैं तो वकीलों को झूठे मुकदमों में आनंद मिलता है। इसी तरह व्यापारी भी कम मात्रा, मिलावट, जमाखोरी, कृत्रिम मूल्य-वृद्धि आदि द्वारा उपभोक्ताओं की खाल उतारने में लगा रहता है। मिलावट करने से न जाने कितनी जानें चली जाती हैं, इस बात का लक्ष्मी के पुजारियों को कोई गम नहीं।और हमारी सरकार को भी इससे कोई दरकार नहीं है।

उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986 पास हुआ, परंतु उसके क्रियान्वयन में देरी की जाती है। सफ़ेदपोश कानून से बचने का रास्ता तालाश लेते हैं। अत: उपभोक्ता को अपने बचाव के लिए स्वयं जागरूक होना पड़ेगा। देश में सैकड़ों उपभोक्ता संगठन हैं, परंतु इनका कार्यक्षेत्र अभी तक महानगरों व नगरों तक ही सीमित है, आज जरूरत है कि ऐसे संगठनों को गाँव स्तर तक अपना कार्य करना चाहिए। इनके अलावा, रेडियो, दूरदर्शन, समाचार-पत्र आदि के माध्यम से उपभोक्ताओं को जाग्रत किया जा सकता है। यह कार्य सरकारी संगठन नहीं कर सकते। युवा इस क्षेत्र में प्रभावी भूमिका निभा सकते हैं।युवाओं को जागरूक होकर समाज में शोषण के खिलाफ जागरूकता लाने की जरूरत है।

8. तिलक नगर, नई दिल्ली।
17 अप्रैल , 2019
सेवा में,
मंत्री, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार,
नई दिल्ली।

विषय- टी.वी. के माध्यम से फैलाई जाने वाली भ्रांतियाँ एवं अंधविश्वास के संबंध में

महोदय,

एक सजग नागरिक होने के नाते मैं आपका ध्यान टी.वी. के माध्यम से विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों द्वारा फैलाई जाने वाली भ्रांतियों एवं अंधविश्वासों की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। आजकल विविध प्रकार के ऐसे कार्यक्रम विभिन्न टी.वी. चैनलों पर प्रसारित किए जा रहे हैं, जिनसे रूढ़िवादिता एवं अंधविश्वास को बल मिलता है। इन कार्यकर्मों का युवा पीढ़ी पर बुरा प्रभाव पड़ता है, इससे युवा पीढ़ी गलत दिशा में जा रही है।

इस तरह के कार्यक्रमों का केवल एक ही उद्देश्य होता है व्यावसायिक दृष्टि से चीज़ों को अधिक सनसनीखेज़ बनाकर प्रस्तुत करना, ताकि अधिक-से-अधिक दर्शकों को आकर्षित किया जा सके। विभिन्न प्रकार के पारिवारिक कार्यक्रमों में भी अंधविश्वास को घुसा दिया जाता है, ताकि उस सीरियल को अधिक लंबा खींचा जा सके। टी.वी. के विभिन्न चैनलों के प्रबंधकों एवं संचालकों को इस बात की थोड़ी भी चिंता नहीं रहती कि इस तरह के कार्यक्रमों का समाज की नई पीढ़ी पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

नई पीढ़ी के अतिरिक्त वर्तमान पीढ़ी के विचार भी इससे दुष्प्रभावित होते हैं और समाज में अवैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा मिलता है। अवैज्ञानिक एवं अतार्किक दृष्टिकोण कभी भी विकास एवं प्रगति के मार्ग पर नहीं ले जा सकता। इस तरह पूरा समाज रूढ़िवादिता एवं अवैज्ञानिकता का शिकार हो रहा है।

मेरा आपसे विनम्र निवेदन है कि आप इस तरह के अंधविश्वासों एवं भ्रांतियों को फैलाने वाले कार्यक्रमों को रोकने के लिए अविलंब उचित निर्देश जारी करें, ताकि समय रहते समाज को गलत दिशा में जाने से रोका जा सके।

धन्यवाद।

भवदीय

महेश प्रकाश

OR

परीक्षा भवन

अ०ब०स० केंद्र

दिनांक: 22 नवंबर 2019

वरिष्ट चिकात्सधिकारी

सिंगल अस्पताल

साध नगर, गोविन्दपुरम।

विषय- मरीज के इलाज में बरती गई लापरवाही के संबंध में।

मान्यवर,

मैं आपका ध्यान इस अस्पताल में एक मरीज के इलाज में बरती गई लापरवाही की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। महोदय, 17 नवंबर, 2019 को विद्यालय जाते हुए मैंने सड़क पर एक व्यक्ति को घायल देखा जिसे कोई अज्ञात वाहन टक्कर मार गया था। मैं उस व्यक्ति को अस्पताल ले आया और डॉक्टर से तुरंत इलाज शुरू करने का अनुरोध किया, परंतु डॉक्टरों ने पहले पुलिस को बुलवाया और आवश्यक कार्यवाही पूरी किए बिना इलाज शुरू नहीं किया। इससे उस घायल

व्यक्ति के शरीर से अधिक रक्त बह चुका था। डॉक्टरों ने इलाज शुरू किया। चार दिनों तक जिंदगी और मौत के बीच झूलने के बाद वह हार गया और उसकी मृत्यु हो गई। यदि डॉक्टर उस समय कागजी कार्यवाही पूरी करने में समय न गँवाते तो घायल की जान बचाई जा सकती थी। डॉक्टरों से इस प्रकार की लापरवाही की उम्मीद नहीं की जा सकती है और ऐसी लापरवाही बरतने के लिए उन्हें दंड दिया जाना चाहिए।

आपसे प्रार्थना है कि आप ऐसा आदेश जारी करें जिसमें मरीज का इलाज सर्वप्रथम करने तथा कागजी कार्यवाही बाद में पूरी करने का निर्देश हो ताकि फिर इलाज में लापरवाही के कारण किसी अन्य मरीज की जान न जाए।

सधन्यवाद

भवदीय

गोविन्द रावत

9. निम्नलिखित में से 2 प्रश्नों के उत्तर 40-50 शब्दों में दीजिये: (3+2)

a. **कहानी का नाट्य रूपांतर करते समय इन महत्वपूर्ण बातों पर ध्यान देना चाहिये-**

   i. कहानी एक ही जगह पर स्थित होनी चाहिये।
   ii. कहानी में संवाद नहीं होते और नाट्य संवाद के आधार पर आगे बढता है। इसलिये कहानी मे संवाद का समावेश करना जरूरी है।
   iii. कहानी का नाट्य रूपांतर करने से पहले उसका कथानक बनाना बहुत जरूरी है।
   iv. नाट्य मे हर एक पत्र का विकास, कहानी जैसे आगे बढती है, वैसे होता है इसलिये कहानी का नाट्य रूपांतर करते वक्त पात्र का विवरण करना बहुत जरूरी होता है।
   v. एक व्यक्ति कहानी लिख सकता है, पर जब नाट्य रूपांतर कि बात आती है, तो हर एक समूह या टीम कि जरूरत होती है।

b. कविता भाषा में होती है इसलिए भाषा का सम्यक ज्ञान जरूरी है भाषा सब्दो से बनती है शब्दों का एक विन्यास होता है जिसे वाक्य कहा जाता है भाषा प्रचलित एवं सहज हो पर संरचना ऐसी कि पाठक को नई लगे कविता में संकेतो का बड़ा महत्व होता है इसलिए चिह्नों (, !,।) यहाँ तक कि दो पंक्तियों के बीचका खाली स्थान भी कुछ कह रहा होता है वाक्य-गठन की जो विशिष्ट प्रणालियाँ होती हैं, उन्हें शैली कहा जाता है इसलिए विभिन्न काव्य-शैलियों का ज्ञान भी जरुरी है। शब्दों का चयन, उसका गठन और भावानुसार लयात्मक अनुशासन वे तत्व हैं जो जीवन के अनुशासन की लिए जरुरी हैं।

c. देशकाल, स्थान और परिवेश के बाद कथानक के पत्रों पर विचार करना चाहिए। हर पात्र का अपना स्वरूप, स्वभाव और उद्देश्य होता है। कहानी में वह विकसित भी होता है या अपना स्वरूप भी बदलता है। कहानीकार के सामने पत्रों का स्वरूप जितकारण पत्नारों का अध्ययन कहानी की एक बहुत महत्त्वपूर्ण और बुनियादी शर्त है। इसके स्पष्ट होगा उतनी ही आसानी उसे पत्रों का चरित्र-चित्रण करने और उसके संवाद लिखने में होगी। इसके अंतगर्त पात्रो के अंत संबंध पर भी विचार किया जाना चाहिए। कौन-से पात्र की किस किस परिस्थिति में क्या प्रतिक्रिया होगी, यह भी

कहानीकार को पता होना चाहिए।

d. आकार की लघुता, संवेदना की एकता, सत्य का आधार या कल्पना, रोचकता, मनोवैज्ञानिकता और सक्रियता, पत्रों की न्यूनता, स्म्क्लन्त्र्य (स्थान, काल और पात्र), जीवन की घटना अथवा स्थिति विशेष का मार्मिक चित्रण, य्थार्थ्यता, परिस्थिति की सरलता, उद्देश्य की स्पष्टता आदि कहानी की विशेषताएँ हैं। इन विशेषताओं के आधार पर कहानी के छह तत्व निर्धारित किए गए हैं - कथानक या कथावस्तु, पात्र तथा चरित्र- चित्रण, कथोपकथन, देश-काल-वातावरण, भाषा-शैली और उद्देश्य।

10. निम्नलिखित में से 2 प्रश्नों के उत्तर 40-50 शब्दों में दीजिये: (3+2)

a. किसी भी समाचार पत्र में कारोबार और अर्थ जगत से जुड़ी खबरों के लिए अलग से एक पृष्ठ होता है कुछ समाचार पत्रों में आर्थिक खबरों के लिए दो पृष्ठ होते हैं यह कहना गलत नहीं होगा किअगर समाचार पत्र में अगर आर्थिक और खेल के पृष्ठ न हो तो वह समाचारपत्र सम्पूर्ण नहीं माना जाएगा।

b. मुद्रित माध्यमों की सबसे बड़ी सीमा यही है कि यह केवल पढे-लिखे और साक्षर व्यक्तियों के लिए उपयोगी है। जो निरक्षर हैं, उनके लिए मुद्रित माध्यमों यानि अखबार और पत्रिका का कोई महत्व नहीं है। इसके अलावा लेखक को पाठक की योग्यता के साथ उसकी रुचि का भी ध्यान रखना पड़ता है। तथा इनमें तुरंत घटी घटनाओं को नहीं दिखाया जा सकता है ।

c. पेज थ्री पत्रकारिता को 'पीत-पत्रकारिता' भी कहा जाता है। इसके तहत सनसनी, चकाचौंध या ग्लैमर फैलाने वाली पत्रकारिता को महत्त्व दिया जाता है। यह पत्रकारिता अमीर और रईस आदमियों पर आधारित होती है ।

d. मुद्रित माध्यम की दो विशेषताएँ हैं -

- अपनी गति, समय एवं स्थान के अनुसार पढ़ने की सुविधा
- विश्वसनीयता

11. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर 50-60 शब्दों में दीजिये:

a. प्रश्नकर्ता अपाहिज से उसके विकलांगपन व उससे संबंधित कष्टों के बारे में बार-बार पूछता है, परंतु अपाहिज उनके उत्तर नहीं दे पाता। वास्तविकता यह है कि उसे अपाहिजपन से उतना कष्ट नहीं है जितना उसके कष्ट को बढ़ा-चढ़ाकर बताया जाता है। प्रश्नकर्ता के प्रश्न भी अस्पष्ट हैं तथा जितनी शीघ्रता से प्रश्नकर्ता जवाब चाहता है, उतनी तीव्र मानसिकता अपाहिज की नहीं है। उसने इस कमी को स्वीकार कर लिया है तथा वह अपना प्रदर्शन नहीं करना चाहता।

b. कवि ने नए-नए उपमानों के द्वारा सूर्योदय का सुंदर वर्णन किया है। ये उपमान सूर्य के उदय होने में सहायक हैं। कवि ने इनका प्रयोग गतिशीलता के लिए किया है। सूर्योदय होते ही यह जादू टूट जाता है।

c. तुलसीदास जी ने समाज में व्याप्त आर्थिक विषमताओं का वर्णन करते हुए कहा है कि पेट भरने की समस्या से मजदूर, किसान, नौकर, भिखारी आदि सभी परेशान थे। अपनी भूख मिटाने के लिए सभी अनैतिक,अधार्मिक कार्य कर रहे हैं। अपने पेट की भूख मिटाने के लिए लोग अपनी संतान तक को बेच रहे हैं। पेट भरने के लिए मनुष्य कोई भी पाप कर सकता है।

12. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर 30-40 शब्दों में दीजिये:

a. कवि कहता है कि वह अपने प्रिय को पूरी तरह भूल जाना चाहता है। उसके वियोग के अंधकार को अपने शरीर और हृदय पर झेलते हुए वह उस अंधकार में नहा लेना चाहता है ताकि उसके प्रिय की कोई स्मृति उसके हृदय में न रहे। इस प्रकार कवि वियोग की अंधकार-अमावस्या में डूब जाना चाहता है।

b. शायर बिलकुल भी भाग्यवादी नहीं है। उसे अपने भाग्य पर बिलकुल भरोसा नहीं। वह तो कहता है कि मैं और मेरी किस्मत दोनों मिलकर रोते हैं। वह मुझ पर रोती है और मैं उस पर रो लेता हूँ। दोनों परस्पर विरोधी हैं। इसलिए कह सकते हैं कि शायर भाग्यवादी नहीं कर्मवादी है। भाग्य की अपेक्षा उसे अपने कर्म पर विश्वास है।

c. लक्ष्मण के मूर्च्छित होने पर हनुमान संजीवनी बूटी लेने हिमालय पर्वत जाते है उन्हें आने में विलंब हो जाने पर सभी बहुत चिंतित व दुखी होते हैं उसी समय हनुमान संजीवनी बूटी के साथ पूरा पर्वत लेकर आ जाते है तब मानो करुण रस के बीच वीर रस का संचार हो जाता है अर्थात लक्ष्मण की मूर्च्छा से दुखी निराश लोगों के मन में उत्साह का संचार होता है।

13. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर 50-60 शब्दों में दीजिये:

a. भक्तिन तर्कपटु थी। केश मुँडाने से मना किए जाने पर वह शास्त्रों का हवाला देते हुए कहती है 'तीरथ गए मुँडाए सिद्ध'। घर में इधर-उधर रखे गए पैसों को वह चुपचाप उठा कर छुपा लेती है, टोके जानेपर वह वह इसे चोरी नही मानती बल्कि वह इसे अपने घर में पड़े पैसों को सँभालकर रखना कहती है। पढाई-लिखाई से बचने के लिए भी वह अचूक तर्क देती है कि अगर मैं भी पढ़ने लगूँ तो घर का काम कौन देखेगा?

b. **काले मेघा पानी दे** संस्मरण में वर्षा न होना, सूखा पड़ना आदि के विषय में विज्ञान अपना तर्क देता है और वर्षा न होने जैसी समस्या के सही कारणों का ज्ञान कराते हुए हमें वास्तविक सत्य से परिचित कराता है। इस सत्य पर लोक प्रचलित विश्वास और सहज प्रेम की जीत हुई है क्योंकि लोग इस समस्या का हल अपने-अपने ढंग से ढूँढ़ने में जुट जाते हैं, जिनका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है। लोगों में प्रचलित विश्वास उनके अनुभवों के आधार पर इतना पुष्ट है कि वे विज्ञान की बात मानने को तैयार नहीं होते हैं।

c. डॉ. आंबेडकर का मानना है कि जन्म, सामाजिक स्तर, प्रयत्नों के कारण भिन्नता व असमानता होती है। समता एक काल्पनिक स्थिति है। इसके बावजूद वे सभी मनुष्यों को विकसित होने के समान अवसर देना चाहते हैं। वे समाज के सभी सदस्यों को आरम्भ से ही समान अवसर एवं समान व्यवहार उपलब्ध कराना चाहते हैं।

14. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर 30-40 शब्दों में दीजिये:

a. बाज़ार का जादू उन लोगों पर चलता है जो खाली मन के होते हैं तथा जेब भरी होती हैं। ऐसे लोगों को अपने ज़रूरत का पता ही नहीं होगा। वे 'पर्चेज़िंग पावर' को दिखाने के लिए अनाप-शनाप वस्तुएँ खरीदते हैं ताकि लोग उन्हें बड़ा समझें। ऐसे व्यक्ति बाज़ार को सार्थकता प्रदान नहीं करते।

b. पहलवान लुट्टन के सुख-चैन के दिन तब शुरू हुए जब उसने चाँद सिंह को कुश्ती में हराकर अपना नाम रोशन किया। राजा ने उसे दरबार में रखकर उसका सम्मान किया। इससे उसकी कीर्ति दूर-दूर तक फैल गई। पौष्टिक भोजन व राजा की स्नेह-दृष्टि मिलने से उसने सभी नामी पहलवानों को जमीन सुँघा दी। अब वह दर्शनीय जीव बन गया। मेलों में वह लंबा चोगा व अस्त-व्यस्त पगड़ी पहनकर मस्त हाथी की तरह चलता था।

c. भले ही राजनीतिक और धार्मिक आधार पर भारत और पाकिस्तान को भौगोलिक रूप से विभाजित कर दिया गया हो लेकिन उन के हृदय में आज भी पारस्परिक भाईचारा, सौहार्द्र, स्नेह और सहानुभूति की भावना विद्यमान है। अमृतसर में रहने वाली सिख बीबी लाहौर को अपना वतन कहती है और लाहौरी नमक का स्वाद भुला नहीं पाती। पाकिस्तान का कस्टम अधिकारी उनकी भावना का सम्मान करते हुए नमक की पुड़िया सफ़िया को वापस देते हुए कहता है "जामा मस्जिद की सीढ़ियों को मेरा सलाम कहना" भारतीय सीमा पर तैनात कस्टम अधिकारी ढाका की जमीन और वहाँ के पानी का स्वाद भूला नहीं पाता। अत:राजनीतिक तौर पर भले ही संबंध तनावपूर्ण हों पर सामाजिक और मानसिक तौर पर आज भी भारत-पाक जनता के बीच मुहब्बत का नमकीन स्वाद घुला हुआ है।